भारत में महिला सशक्तिकरण और सामाजिक गतिशीलता (विशेषतः बिहार राज्य के संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

कंचन कुमारी

भारत में महिलाओं की स्थिति सदैव एक समान नहीं रही है। उसमें युगानुरुप परिवर्तन होते रहे हैं । उनकी स्थिति में वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक अनेक उतार-चढ़ाव आते रहे हैं तथा उनके तदनरूप बदलाव भी होते रहे हैं। जहां वैदिक युग में स्त्रियों की स्थिति सुदृढ़ थी । जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियां समान रूप से आदर व प्रतिष्ठित थी । स्त्रियों की अवनति दौर संस्थानिक रूप से उत्तर वैदिक काल से प्रारंभ हुआ और मध्यकाल में इनकी स्थिति अनेक कुप्रथाओ एवं समाजिक अंकुशो ने और भी दयनीय कर दी । अशिक्षा और रूढ़िवादी जकड़ता ने स्त्रियों को घर की चारदीवारी में कैद कर उन्हें अबला, रमणी और भोग्या बना दिया।

19 वीं सदी के पुर्वार्ध में भारत के समाजसेवीयों जैसे राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, केशव चंद्र सेन आदि ने अत्याचारी एवं महिला उत्थान विरोधी सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाई और समाज से पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बहु-विवाह प्रथा पर रोक एवं हिन्दू विधवा पुनर्विवाह से संबंध समाजोद्धारक कार्य किए और इससे संबंधित कानून पास करवाए।